डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned with CamScanner

प्रश्न :→ चोलों की प्रशासनिक उपलब्धि पर प्रकाश डालें।

उत्तर :→ विंध्यांचल के दक्षिण में तुंग भद्रा का प्रदेश दक्षिणा पथ के नाम से जाना जाता है। जहाँ प्राचीन काल में दो राजा राज्य करते थे। चोल एवं पांड्य जिसमें चोल राज्य महत्वपूर्ण राज्यों के श्रेणी में आते हैं। इसका सबसे प्रमुख राजा राजराज प्रथम थे कदापि राजनैतिक दृष्टि कोण से चोलों का राज्य सबसे अधिक प्राचीन राज्य है। इसकी जानकारी हमें मेघा स्थानिज की इंण्डिका और अशोक के अभिलेखों से मिलती है। वैसे संगम साहित्य में वर्णित अभिलेखों में भी चोलों का उल्लेख मिलता है। 9वीं शताब्दी से लेकर 13वीं शताब्दी में चोलों ने दक्षिण भारतीय राजनैतिक पर अपना आधिपत प्रवाह जमाये रहा।

(1) प्रान्तक प्रथम :→ 9वीं शताब्दी में चोलों की राजनैतिक सत्ता का संस्थापक विजयालय था। उसने पल्लवों की राजनैतिक दुरभलता का लाभ उठाकर तनजौव पर अधिकार कर लिया। और वहाँ स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। विजयालय का उत्तराधिकारी आदित प्रथम था। उसनें पल्लव पांड्य संघर्ष में पल्लवों का साथ दिया था। यही कारण है कि उसके इन कार्यों से प्रसन्न होकर पल्लवों ने तनजोर पर चोलों का आधिपत ही स्वीकार नही किया बल्कि अपने राज्य की कुछ भाग भी सौप दिया। लेकिन चोल राज्य इतने से ही संतुष्ट नही थी वह अपनी शक्ति का विस्तार कर रहे थे फलस्वरूप चोलों और पल्लवों में संघर्ष प्रारंभ हुआ। वैसे आदित के पुत्र प्रान्त चालों का अधिकार विस्तार

Scanned with CamScanner

किया युद्ध और सैनिक स्तर पर उसने अपने पिता से प्राप्त राज्य का विस्तार किया लेकिन संघर्ष के तीसरे चरण वह मारा गया।

(ii) राज राज प्रथम :→ प्रान्तक के पराजय के बाद तीन दर्शकों तक चोलों शक्ति का हरास होता रहा लेकिन जब 985 ई० राजराज प्रथम चोल वंश का शासक बना चोल वंश की गिरती हुई। व्यवस्था मे अमूल परिवर्तन ला कर इतिहास के उज्जवल के पृष्टि पर एक नये अध्याय को जोड़ दिया। क्यों कि इससे पहले के लोग समक्ष रहे थे कि प्रान्तक के बाद शायद अब चोल वंश का उदय सही ढंग से नही हो पायगा लेकिन राज राज प्रथम ने लोगों की इन उम्मीदों को पानी मे फेर कर चोल वंश के स्वर्णीम अतित को उजारकर प्राचीन भारतीय इतिहास मे चंदन वृक्ष लगा दिया क्यों कि उन्होंने करीबन 30 बर्षीय तक शासन किया उसके समय मे चोल राज्य की काफी प्रगति हुई वे अब लक्षद्विप और मालद्विप समुहों पर अपना अधिकार स्थापिता कर लिया। अब इतना ही नही बल्कि कालीन का युग और नरेश भी पराजित हो गये थे। एक महान विजेयता एवं सम्रानिर्वेयता के समरिप वह कुशल प्रशासक कला एवं विद्या का संगरक्षक एवं उदार राजा था उसके द्वारा निर्मित तन जोप का शिव मंदिर आज भी चोल युगीन स्थापक काल का विशिष्ट नमुना है।

(iii) राजेन्द्र चोल — राज राज के प्रथम के बाद चोलवंश का दूसरा शासक राजेन्द्र प्रथम हुआ उन्होने अपने

Scanned with CamScan

पिता से विरासत मे मिली हुई । विशाल सम्राज्य को बनाये रखा ही साथ ही एक सुदृढ़ सेना और थल सेना के सम्राज्य का विस्तार भी किया उसके समय समय मे चोल शक्ति का काफी विकास हुआ । सबसे बड़ी बात तो यह है कि अपने शासन काल के पॉचवे वर्ष मे उसने सम्पुर्ण लंका पर विजय प्राप्त की थी । इतना ही नही बल्कि उन्होने पाल शासक और महिपाल को पराजित किया उन्होने अब बदली हुई परिस्थिति मे चिदम्बर के निकट नई राजधानी को गंगोई चोल प्रथम रखा बंगाल से लाये गयें गंगा जल से इस नगर को पवित्र किया । राजेन्द्र की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि से ये कि उन्होंने जा समुद्रा मलय प्रयद्वीप से विशाल जल बेड़ की सहायता से आक्रमण कर सलेन्द्र सम्राज्य मे शासक श्री विजय पर अपना प्रभाव आसित किया । वैसे यह बात भी सही है कि राजेन्द्र को अपने शासन के अंतिम समय मे अनेक विद्रोहो का सामना करना पड़ा लेकिन परिस्थिति से घबराने वाला व्यक्ति नही था ।

(iii) प्रशासनिक व्यवस्था — चोलो ने एक विशाल सम्राज्य की स्थापना के साथ - साथ इसके प्रशासन की भी समुचित व्यवस्था की केन्द्रीय प्रशासन का सर्वोच्च अधिकारी राजा होता था । उसके अधिकार असीम होते थे । तथा राज्य मे उसकी प्रतिष्ठा का पता हमे इस बात से लगता है कि चोल राजाओ और रानियों की मुर्तियां मंदिरो के स्थापित कर उनकी पुजा की जाती थी ।

Scanned with CamScanner

राजपद वंशानुगत होता था। तथा युवराज श्रेष्ठता के अधार पर राज का उत्तराधिकारी बनता था। इतना ही नही बल्कि युवराज को प्रशासन के महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। राजा मंत्री एवं पदाधिकारीयों की सहायता से शासन करता था लेकिन सरकारी पदाधिकारीयों को वेतन के बदले में भूमि दी जाती थी। जहाँ तक न्याय व्यवस्था की बात है। न्याय के क्षेत्र मे राजा सबसे ऊपर रहता था।

चोल प्रशासन की सबसे मुख्य विशेषता स्थानीय तत्वों पर बल देना था प्रशासनिक सुविधा के लिए सम्पूर्ण साम्राज्य विभिन्न मंडलों मे विभक्त था वहाँ ग्राम प्रशासक की विशेष व्यवस्था की और प्रत्येक गाँव करीबन 30 वार्डो मे बाँटा हुआ था वार्डों की सदस्यों का निर्वाचन होता था। साथ ही सदस्य को कुछ निहित योग्यता पूरी करनी होती थी। विभिन्न कार्यों के सुचारु सम्पादन के लिए समितियाँ बनती थी जो विशिष्ट कार्य करती थी। जहाँ तक सामाजिक व्यवस्था की बात है। तो दास प्रथा समाज मे स्थापित थी। मंदिरों मे अनेक देव दासीयाँ रखी जाती थी। समाज मे स्त्रियों की स्थिति समन्तः अच्छी थी। वे प्रशासन मे भी भाग लेती थी पर्दा प्रथा का प्रचलन उस समय नही थी। जहाँ तक शैली की बात है तो चोलों ने अनेक द्रविड शैली अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया था।
लेकिन उत्थान एवं पतन तो प्रकृति का शास्वत

नियम है। उसी नियम के तहत राजेन्द्र चोल के बाद चोल साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन होता चला गया जिस समय चोल वंश मुख्य चालुक्यो से हुआ और उन्हे अनेक आंतरिक विद्रोहो का सामना करना पड़ा। लगभग 4 शताब्दीयों तक शासन करने के बाद चोल का राज्य समाप्त हो गया।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते है कि प्राचीन भारतीय इतिहास मे चोलो का महत्वपूर्ण स्थान है। चोलो के अधीन दक्षिण भारत सर्वांगीन विकास हुआ। इसकी ~~संबंध~~ सबसे बड़ी विशेषता तो यह है इसमे स्थानीय तत्वो को ~~विशेश~~ विशेष महत्व दिया गया। अतः हम कह सकते है कि यह युद्द समाजिक सु व्यवस्था, आर्थिक प्रगति धार्मिक सहसुनता तथा कलात्मक विकास का युद्द था। साथ ही साथ चोल राजाओ ने शिक्षा के ओर भी समुचित ध्यान देकर व्यवस्थित किया था।

—— x ——

Scanned with CamScanner